COURSE NAME – M.Ed 1ST SEMESTER

SUBJECT NAME & CODE
PSYCHOLOGY OF LEARNING & DEVELOPMENT

(C.C.1)

METHODS OF PSYCHOLOGY

मनोविज्ञान की विधियाँ

साक्षात्कार विधि

सक्षात्कार को अंग्रेजी में 'Interview' का नाम दिया जाता है जो कि दो शब्दों से मिलकर बना है। 'Inter + View', जहां प्रथम शब्द 'Inter' का अर्थ है 'आन्तरिक' तथा द्वितीय शब्द 'View' का अर्थ है 'अवलोकन करना'। सामान्य अर्थ में साक्षात्कार से तात्पर्य एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति से वार्तालाप के द्वारा उसकी योग्यता, ज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करना है।

अन्य शब्दों में साक्षात्कार का अर्थ नियोजित ढंग से कुछ तथ्यों अथवा घटनाओं की आंतरिक विशेषताओं को ज्ञात करके उनके बीच पाये जाने वाले कार्य-कारण संबंध को ज्ञात करना होता है।

इस विधि में कम से कम दो व्यक्ति आवश्यक रूप से होते हैं। इसमें एक अध्ययनकर्ता और दूसरा प्रयोज्य होता है। करलिंगर (Kerlinger), 1974 के अनुसार, 'साक्षात्कार एक आमने-सामने वाली अन्तर्वैयक्तिक भूमिका अर्थात् परिस्थिति है जिसमें एक व्यक्ति, साक्षात्कारकर्ता, दूसरे व्यक्ति, जिसका साक्षात्कार किया जा रहा है उत्तरदाता से उन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहता है, जिनकी रचना संबोधित शोध कार्य की समस्या के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई है। ("The interview is a face to face interpersonal role situation in which one person, the interviewer, asks a person being interview, the respondent, the questions designed to obtain answers pertinent to the perposes of the research problems.")

मनोविज्ञान में इस विधि का प्रयोग स्वतंत्र रूप में व सहायक विधि के रूप में भी किया जाता है। इस विधि का प्रयोग किसी समस्या के संबंध में प्राथमिक सूचना एकत्र करने के लिए किया जाता है।

साक्षात्कार विधि के प्रकार (Types of Interview Method)

1. **संरचित साक्षात्कार या प्रमाणिक साक्षात्कार विधि (Structured Interview or Standardized Interview)**- संरचित साक्षात्कार विधि में पहले ही निर्धारित प्रश्नों की एक सूची की सहायता के प्रयोज्यों से सम्पर्क स्थापित कर उनका साक्षात्कार लिया जाता है। इसमें अनुसूची की शब्दावली व भाषा आदि में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता, इसलिए इसे नियंत्रित अथवा औपचारिक साक्षात्कार (Formal) कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य एकरूपता बनाये रखना होता है। इससे प्राप्त अंतरों को वैज्ञानिक आधार पर श्रेणीबद्ध कर निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

2. **असंरचित साक्षात्कार अथवा अप्रमाणिक साक्षात्कार (Unstructured Interview of Unstandardized Interview)-** असंरचित साक्षात्कार जैसा कि नाम से स्पष्ट है उत्तरदाताओं से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने के लिए साक्षात्कारकर्ता स्वतंत्र होता है। इसी कारण इसे अनियंत्रित (Uncontrolled) अथवा अनौपचारिक (Informal) साक्षात्कार भी कहा जाता है। इस प्रकार के साक्षात्कार में संरचित के विपरीत बिना किसी पूर्व अनुसूची की सहायता से साक्षात्कारकर्ता कुछ मुख्य प्रश्न पूछता है और उत्तरदाता उन प्रश्नों के उत्तर देता है। इस विधि से उत्तरदाता उन प्रश्नों के उत्तर देता है इस विधि से प्रयोज्य को समझने का अधिक अवसर प्राप्त होता है।

असंरचित साक्षात्कार को चार भागों में बांटा जा सकता है-

(i) केन्द्रित साक्षात्कार (Focused Interview)
(ii) नैदानिक साक्षात्कार (Clinical Interview)
(iii) अनिर्देशित साक्षात्कार (Non-directive Interview)
(iv) पुनरावृति साक्षात्कार (Interview Repetitive Interview)

उपर्युक्त चार प्रकार के असंरचित साक्षात्कार का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही किया जाता है।

साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य (Main Objectives of Interview)

(1) साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य नवीन प्राक्कल्पनाओं का निर्माण करना, (Formulation of New Hypothesis) साक्षात्कार से भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के बारे में उनके विचारों का पता चलता है जिसके आधार पर नई प्राक्कल्पनाओं का निर्माण संभव है।

(2) जिन घटनाओं को हम नहीं देख सकते व जिनका समाधान अन्य विधियों से भी संभव नहीं हैं। साक्षात्कार से अध्ययन किया जा सकता है।

(3) साक्षात्कार की सहायता से व्यक्तियों से प्रत्यख संपर्क कर सामग्री का संकलन करना भी है। ये सूचनाएं प्राथमिक स्तर की होती है।

(4) साक्षात्कार विधि में प्राय: प्रशिक्षित अध्ययनकर्ता होता है जिससे विश्वसनीय सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं।

(5) नैदानिक साक्षात्कार की सहायता से व्यक्ति के जीवन इतिहास को जानने के लिए मानसिक रोगियों में वार्तालाप करने के लिए किया जाता है। इसके माध्यम से अनेक अनुभवों को जाना जा सकता है जो किसी व्यवस्था में सुधार करने में सहायक हों।

साक्षात्कार विधि का महत्व (Importance of Interview Method)

(1) साक्षात्कार विधि को एक सहायक विधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(2) इस विधि से भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही साथ गोपनीय अनुभवों तथा घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(3) इस विधि की सहायता से व्यक्तिगत तथ्यों के अध्ययन में सहायता मिलती है।

(4) इस विधि से सभी प्रकार के व्यक्तियों, बच्चों, बूढ़ों, अशिक्षित आदि से भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(5) इसे कर्मचारिचों के चयन प्रक्रिया में भी एक विशेष स्थान दिया जा सकता है।

(6) यदि साक्षात्कार संवेगात्मक पृष्ठभूमि में सम्पादित किया जाता है तो इस विधि से जो सूचना प्राप्त की जाती हैं, वह अन्य विधियों द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती।

साक्षात्कार विधि की सीमाएं (Limitations of Interview Method)

साक्षात्कार विधि के गुण होते हुए भी इसकी कुछ सीमाएं हैं, वे निम्न प्रकार हैं-

(1) साक्षात्कारकर्ता को प्रयोज्य की मौखिक रिपोर्ट पर निर्भर रहना पड़ता है। प्रयोज्य साक्षात्कारकर्ता के सामने अपनी पूरी बात नहीं बोल पाता है।

(2) साक्षात्कारकर्ता की अपनी प्रेरणाएं (Motivation), अभिवृतियां (Attitudes), इच्छाएं (Desires) भी अध्ययन को प्रभावित करती हैं।

(3) सक्षात्कार विधि से शुद्ध व विश्वसनीय जानकारी तब तक नहीं ली जा सकती तब तक कि स्वयं साक्षात्काकर्ता को इस विधि की पूरी जानकारी न हो।

(4) स्थानीय भाषा (Local Dialect) के अभाव में पूर्ण जानकारी संभव नहीं है।

(5) इस विधि का प्रयोग छोटे बच्चों व पशुओं पर नहीं किया जा सकता।

(6) साक्षात्कार का समय यदि कम होता है तो पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

(7) कई बार साक्षात्कार विधि बहुत खर्चीली पड़ती है।

(8) साक्षात्कार विधि द्वारा प्राप्त सूचनाओं में कुछ समय बाद विस्मरण की संभावना रहती है जिससे विश्वसनीयता संभव नहीं होती।

साक्षात्कार विधि में उपर्युक्त सीमाओं के होते हुए भी इसका प्रयोग नितांत आवश्यक है, क्योंकि यह विधि अन्य विधियों के साथ सहायक का कार्य करती है। उक्त सीमाओं को निम्नलिखित सुझावों को ध्यान में रखकर उपयोगी बनाया जा सकता है।

(1) साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण दक्ष मनोवैज्ञानिकों द्वारा करना चाहिए।

(2) साक्षात्कार के समय साक्षात्कार अनुसूची का पालन ईमानदारी, समय व उद्देश्य को ध्यान में रखने से कुछ हद तक इसमें सुधार लाया जा सकता है।

(3) साक्षात्कार विधि में आधुनिक प्रविधि का उपयोग, जैसे- रिकार्डिंग व कम्प्यूटर का प्रयोग कर इसे विश्वसनीय बनाया जा सकता है।

व्यक्ति अध्ययन विधि

वैयक्ति अध्ययन विधि मनोविज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी मानी जाती है, क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति, व्यक्ति समूह अथवा किसी एक व्यक्ति समुदाय का पूर्ण अध्ययन किया जाता हैं संपूर्ण जीवन से तात्पर्य जीवन के व्यवहार, प्रतिमान तथा जीवन की क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के अर्न्तसंबंधों की जानकारी प्राप्त की जाती है। इस अध्ययन में विश्लेपण कर यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि व्यक्ति के असामान्य व्यवहार का प्रमुख कारण क्या है?

पी.वी. यंग (P.V. Young, 1956) के अनुसार, 'वैयक्ति अध्ययन एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा एक सामाजिक इकाई चाहे वह व्यक्ति, एक परिवार, संस्था, संस्कृति, समूह या समस्त समुदाय हो, के जीवन का अन्वेपण तथा विश्लेपण किया जाता है।'

"Case study is method of exploring and analyzing the life of a social unit be that unit a person, institution, culture, group or even an entire community. Its aim is to determine the factors that account for the complex behavior patterns of the unit and the relationship of the unit to its surrounding milieu."

उपर्युक्त परिभापा से स्पष्ट है कि इस अध्ययन पद्धति से तात्पर्य किसी एक विशेप सामाजिक इकाई का अध्ययन करके कार्य कारण संबंध को स्पष्ट करने का प्रयत्न करना है।

वैयक्ति अध्ययन विधि की विशेषताएं (Characteristics of Case Study Method)

वैयक्ति अध्ययन विधि की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्न प्रकार हैं-

(1) इस विधि से एक समय में केवल एक इकाई का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन किया जाने वाला विषय कोई व्यक्ति या उसके जीवन की कोई घटना हो सकती है।
(2) इस अध्ययन विधि द्वारा किया जाने वाला अध्ययन अत्यधिक सूक्ष्म व गहन होता है।
(3) इस अध्ययन विधि द्वारा किसी एक इकाई के एक पहलू का ही अध्ययन नहीं करती बल्कि अध्ययन के समग्र पक्षों का सम्मिलित रूप से अध्ययन करना होता है।
(4) व्यक्ति-अध्ययन विधि की प्रकृति गुणात्मक होती हैं।
(5) इस विधि का उद्देश्य किसी इकाई की विभिन्न परिस्थितियों के बीच कार्य-कारण के संबंधों को ज्ञात करना है।
(6) यह विधि दीर्घकालीन है, अध्ययनकर्ता समय की चिंता किये बिना तब तक अध्ययन में लगा रहता है तब तक पूर्ण तथ्य न मिल जायें।

व्यक्ति-अध्ययन विधि के स्रोत व प्रविधियां (Tools and Techniques of Case Study Method)

(1) व्यक्ति से संबंधित प्राथमिक सूचनाएं व्यक्ति के मित्रों, पड़ोसियों, परिवार के सदस्यों आदि से संपर्क कर प्राप्त की जाती हैं।
(2) व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि की सूचनाओं का पता लगाया जाता हैं साथ ही साथ शिक्षा का स्तर व सांस्कृतिक विशेषताओं संबंधी सूचनाओं को भी एकत्रित किया जाता है।
(3) व्यक्ति के माता-पिता से उसके बचपन, रहन-सहन, शिक्षा, बीमारी, दुर्घटना, कोई विशेष घटना आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।
(4) कुछ अन्य स्रोतों से भी व्यक्ति के बारे में सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है। जैसे पुलिस, चिकित्सालय आदि से व्यक्ति के अभिलेख (Records) से भी महत्वपूर्ण जानकारी ली जा सकती है।
(5) डायरियां (Diaries), व्यक्तिगत डायरी बहुत अच्छा स्रोत माना जाता है। इसमें जीवन की गुप्त बातें भी लिखी होती है।

व्यक्ति अध्ययन विधि के गुण (Merits of Case Study Method)

व्यक्ति अध्ययन विधि के निम्नलिखित गुण हैं-

(1) इस विधि का नैदानिक क्षेत्र में बहुत महत्व है।
(2) यह विधि सूक्ष्म अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।
(3) इस विधि में कई विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इससे सुविधा रहती है व विश्वसनीयता का स्तर बढ़ता है।

(4) इस विधि में व्यक्ति के अतीत के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

(5) व्यक्ति का व्यवहार बहुत ही जटिल है अत: इसको समझने के लिए केवल इसकी विधियों पर निर्भर न रहकर इस विधि की सहायता ली जा सकती है। छोटी से छोटी इकाई आदि को समझने के लिए यह उपर्युक्त विधि है।

व्यक्ति-अध्ययन विधि की सीमाएं (Limitations of Case Study Method)

इस विधि के कई गुण होते हुए भी इसकी निम्न सीमाएं हैं-

(1) व्यक्ति अध्ययन विधि अवैज्ञानिक समझी जाती है, क्योंकि इस विधि में तथ्यों का संकलन करने पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं रहता है जो एक निश्चित वैज्ञानिक विधि में होता है।

(2) इस विधि में अतीत की बातों, स्मृति को ध्यान में रखकर ही घटना का अध्ययन किया जाता है। यदि विषयी की स्मृति दोषपूर्ण है तो वास्तविक सूचनाएं नहीं मिल पातीं।

(3) इस विधि में समय व धन का अधिक व्यय होता है।

(4) इस विधि में अध्ययनकर्ता को पुनरावृति में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

(5) यह विधि मात्रात्मक न होकर गुणात्मक होने के कारण वस्तुपरक न होकर आत्मगत कहलाती है।